MODEL QUESTIONS
FOR
MATRIC EXAMINATION
SUBJECT-HINDI
SET-V

(समय– 3घंटे 15 मिनट) (पूर्णांक–100)

1. (अ)निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें:– 6×2=12

जीवन में सत्संगति का बड़ा महत्त्व है। 'सत्संगति' का अर्थ है अच्छी संगति। छात्रों को सदैव अच्छी संगति करनी चाहिए क्योंकि सत्संगति ही वह महान सीढ़ी है जिस पर चढ़कर जीवन की सर्वोत्तम अच्छाइयों को छुआ जा सकता है।

'सत्संगति' के संबंध में कहा गया है– 'संगति से गुण होता है संगति से गुण जात' और 'संसर्गजाः दोष गुण भवन्ति' जिसका अर्थ है कि संगति से ही दोष–गुण प्रकट होते हैं। अतः जीवन के सारस्वत विकास के लिए जितने भी आवश्यक तत्व बतलाए गए है, उनमें संगति (अच्छी संगति) को श्रेष्ठ माना गया है। अच्छी संगति करनेवाले बच्चे जीवन के सर्वोत्तम गुण स्वतः सीखते जाते हैं। जीवन का लक्ष्य उन्हें साफ नजर आता है तथा लोक–व्यवहार का ज्ञान भी उन्हें प्राप्त होता रहता है। अच्छी संगति में रहनेवाले बच्चे उत्तरोत्तर विकास करते जाते हैं, जबकि बुरी संगति वाले बच्चे अनेक दुर्गुणों के शिकार बनकर शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए सिर दर्द भी बन जाते हैं।

अतः ऐसी परिस्थिति में हमें चाहिए कि हम घर में हों या घर के बाहर, ऐसी संगति में रहें कि हमारे भीतर किसी प्रकार के दुर्गुण न आने पाएँ ।

महात्मा गाँधी ने अपनी 'आत्मकथा' में सदैव 'अच्छी संगति' पर जोर दिया था। हम जितने भी महापुरूष देखते हैं, वे महान कैसे बने हैं ? इसके पीछे का मूल कारण संगति का प्रभाव ही रहा है। हम संगति के महत्त्व से इनकार नहीं कर सकते क्योंकि अच्छी संगति पल–पल हमें बदलने में सक्षम होता है। जबकि बुरी संगति एक ऐसी धुन की तरह है जिनके संस्पर्श से ही अवनति संभावित हो जाती है।

आज जीवन की विभिन्न परिस्थितियाँ बदल गई है। विज्ञान के नित नूतन आविष्कार ने हमारे जीवन को सरल बना दिया है तथा अनेकानेक रोगों एवं बीमारियों पर काबू हो पाया है, तथापि 'संत्संगति' के महत्त्व चिरंतन शाश्वत सत्य की भाँति हमारे समक्ष ढाल की तरह खड़ा है और हमें यह मानना होगा कि यदि हम अच्छी संगति करते हैं तभी हम सर्वत्र प्रशंसा पाते है। सत्य, दया, क्षमा, करूणा, ईमानदारी, परिश्रम करने का गुण आदि तभी हमारे भीतर आ सकता है।

दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें: (प्रत्येक 30 शब्दो में)

(I) इस पाठ का कोई उपयुक्त शीर्षक दें।

(Ii) अच्छी संगति क्यों जरूरी है ?

(Iii)अच्छी संगति के बारे में क्या कहा गया है ?

(Iv)महापुरूष संगति से महान कैसे बने ?

(v) छात्रों के लिए संगति क्यों प्रभावपूर्ण माना जाता है ?

(vi)अच्छी संगति वाले छात्रों की क्या पहचान है ?

1. (ब)निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें:– 4×2=8

सुख और दुःख जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं । जिस प्रकार गाड़ी का एक पहिया काम नही आता, ठीक उसी प्रकार यदि केवल सुख आ जाए अथवा केवल दुःख आ जाए, तब भी जीवन रूपी गाड़ी ठीक ढंग से चल नहीं सकती। जीवन जीने के लिए संतुलन आवश्यक है । शास्त्रों में कहा गया है कि

न तो सुख आने पर खूब खुश होना चाहिए, न दुख आ पड़ने पर हमेशा रोते रहना चाहिए, क्योंकि धैर्य के साथ अच्छे अवसर की प्रतीक्षा करनी चाहिए क्योंकि सदा एक जैसे दिन नहीं रहते।

जीवन का सुख भी हमेशा स्थायी नहीं रहने पाता। जिस तरह रात के बाद दिन आता है, गर्मी के बाद सर्दी आती है उसी प्रकार सुख और दुःख के आने–जाने का क्रम चलता रहता है। ऐसी स्थिति में बुद्विमान मनुष्य धीरज धारण करते है। विपत्ति व संकट के समय शांत रहते है, घबड़ाते नहीं। स्वामी विवेकानंद, महात्मा गाँधी तथा डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम (पूर्व दिवंगत राष्ट्रपति) अपने भाषणों में यही कहा करते थे कि सुख–दुःख में समान भाव रखना चाहिए। साथ ही अपने कर्म के प्रति (सचेष्ट भाव से) निरंतर प्रयत्नशील बने रहना चाहिए। छात्रों को अपने लक्ष्य सदैव सामने रखना चाहिए। इससे उन्हें पढ़ाई में मन लगेगा, सफलता–प्राप्ति के मार्ग अवरूद्ध नहीं होंगे तथा सर्वत्र ही इज्जत और सम्मान भी पाते रहेंगे।

आज हमारा मनोविज्ञान भी यही कहता है कि सुख–दुःख जैसी मनःस्थितियाँ शरीर के विभिन्न अंगों पर अपना प्रभाव भी डालती है। आप यदि किसी के काम की प्रशंसा करते हैं तथा उसे सुख पहुँचाते हैं, तो उसके काम करने की गति में तेजी आएगी। उसी तरह यदि आप किसी के कार्यों में ढ़ेर सारी खामियाँ ढूँढ़ेंगे तथा उसे अपमानित कर दुखी बनाएँगे, तो इसका प्रभाव उसके काम पर जरूर पड़ेगा, इन बातों से यह भी स्पष्ट होता है कि हमें ऐसी स्थितियाँ आने नहीं देनी चाहिए जिससे हमारा मनोबल टूट जाए। अतः सुख–दुःख को सदैव समान समझें तथा जीवन में उत्तरोत्तर संतुलन बनाना सीखें। इससे अनेक लाभ होगे।

दिए गए प्रश्नों के उत्तर देः–(प्रत्येक 30 शब्दो में)

(I) सुख–दुःख जीवन की गाड़ी के दो पहिए है, कैसे ?

(Ii) जीवन को संतुलित बनाने के लिए क्या करना चाहिए ?

(Iii) विभिन्न विद्वानों ने सुख–दुःख के संबंध में क्या कहा है ?

(Iv) इस पाठ का कोई उपयुक्त शीर्षक दें ?

2. दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर 250 शब्दों में किसी एक विषय पर निबंध लिखेंः 10

(क) चरित्र की महत्त्ता

(I) भूमिका

(Ii) छात्र जीवन के लिए सीख

(Iii) अच्छे चरित्र से लाभ

(Iv) बुरे चरित्र से हानि

(v) उपसंहार

(ख) आदर्श नागरिक

(I) भूमिका

(Ii) अच्छे नागरिक के दोष

(Iii) अच्छे नागरिक के गुण

(Iv)महत्त्व

(v)उपसंहार

(ग) दुर्गा पूजा

(I) भूमिका

(Ii) विभिन्न कथाओं का जुड़ाव

(Iii) दुर्गापूजा की प्रतीकात्मकता

(Iv)नारी शक्ति के महत्त्व पर विचार

(v)उपसंहार

3. जीवन में अध्ययन का महत्व बताते हुए अपने मित्र के पास एक पत्र लिखें । 5

अथवा, दो दिनों की छुट्टी के लिए अपने प्रधानाध्यापक के पास एक आवेदन–पत्र लिखें।

4. संज्ञा और सर्वनाम में अंतर स्पष्ट करें। 5

अथवा, समास किसे कहते हैं, इनके भेदों को लिखें।

5. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:– 5×1=5

(i) धी .....वाचक संज्ञा है।

(ii) कर्त्ता में.....चिन्ह होता है।

(iii) साक्षर का विपरीतार्थक शब्द.....है।

(iv) हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध '.....क्यों बढ़तें हैं', हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित है।

(v) 'कलम' शब्द का पर्यायवाची.....होगा।

6. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्य को शुद्ध करें। 5×1=5

(क) मैंने पुस्तक पढ़ा ।

(ख) राम ने पत्र लिखी ।

(ग) उसके आँख में दर्द है।

(घ) उसका परीक्षा चल रहा है ।

(ड.) मेरा कलम टूट गया ।

7. स्तम्भ 'अ' और स्तम्भ 'ब' का सही मिलान आमने–सामने लिखकर करें:– 6×1=6

स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(i) शिक्षा और संस्कृति	(क) डा0 भीम राव अम्बेडकर
(ii) विष के दाँत	(ख) अनामिका
(iii)परंपरा का मूल्यांकन	(ग) जीवनानंद दास
(iv)श्रम विभाजन और जाति प्रथा	(घ) महात्मा गाँधी
(v) अक्षर ज्ञान	(ड.) नलिन विलोचन शर्मा
(vi) लौटकर आउँगा फिर	(च) राम विलास शर्मा

निर्देश : (प्रश्न संख्या 8 से 12 (**iii**) और 13 से 17(**iii**) तथा 18 से 20 तक के प्रश्नों के उत्तर 30 शब्दों में दें)

8. अच्छी शिक्षा गाँधीजी किसे मानते हैं ? 3

9. जातिप्रथा के दोष क्या हैं ? 3

10. परंपराओं से क्या सीखा जा सकता है ? 3

11. मछली के प्रति बच्चों में कौन –सी जिज्ञासा थी ?

12. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें:–

शिक्षा से मेरा अभिप्राय यह है कि बच्चे मनुष्य के शरीर, बुद्धि और आत्मा के सभी गुणों को प्रकट किया जाए । पढ़ना–लिखना शिक्षा का अंत तो है ही नहीं, वह आदि भी नहीं है। वह पुरूष और स्त्री को शिक्षा देने के साधनों में केवल एक साधन है। साक्षरता स्वयं कोई शिक्षा नहीं है । इसलिए तो मैं बच्चे की शिक्षा का आरंभ इस तरह करूँगा कि उसे कोई उपयोगी दस्तकारी सिखाई जाए और जिस क्षण से वह अपनी तालीम शुरू करे उसी क्षण उसे उत्पादन का काम करने योग्य बना दिया जाए।

(i) यह गद्यांश किस पाठ से उद्धृत है ? 1

(ii) इस पाठ के लेखक कौन है ? 1

(iii)गाँधीजी ने किस प्रकार की शिक्षा देने पर बल दिया ? 3

13. मैं चाहता हूँ कि सारी शिक्षा किसी दस्तकारी या उद्योगों के द्वारा दी जाए। 3

14. मछली और दीदी में क्या समानता दिखलाई पड़ी ?स्पष्ट करें । 3

15. धर्म की दृष्टि से भारत का क्या महत्व है ? 'भारत से हम क्या सीखें' पाठ के आधार पर बताएँ । 3

16. डुमराँव की महत्ता किस कारण से है ? 3

17. निम्नलिखित पद को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें:–

स्वर्ण शस्य पर–पद–तल लुंठित,
धरती–सा सहिष्णु मन कुंठित,
क्रंदन कंपित अधर मौन स्मित,
राहु ग्रसित
शरदेन्दु हासिनी!

(i)यह पद्यांश किस पाठ से उद्धृत है ? 1

(ii)इस पाठ के रचनाकार कौन है ? 1

(iii)पद्यांश का भाव स्पष्ट करें । 3

18. मंगम्मा का चरित्र–चित्रण करें । 3

19.लक्ष्मी कौन थी ? उसकी पारिवारिक स्थिति का चित्र प्रस्तुत करें । 3

20.'ढहते विश्वास' शीर्षक कहानी की सार्थकता स्पष्ट करें । 4